कलीसिया। अध्याय 6

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उस की आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* *1 कुरिन्थियों 2-5*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 कुरिन्थियों 2-5) में से अपने चुने हुए समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही स्वभाव]* *श्रृंखला ई की समीक्षा करें*

दो-दो करके ***श्रृंखला ई "मसीही स्वभाव"*** की 5 बाइबल आयतों की ***समीक्षा*** करें।

(1) मसीह की समानता में : 2 कुरिन्थियों 3:18 - परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं।
(2) पवित्रता : 1 पतरस 2:11 - हे प्रियों, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।
(3) प्रेम : मरकुस 12:30-31 - और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना : इस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।
(4) विश्वास : रोमियों 4:20-21 - और न अविश्वासी होकर परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर संदेह किया, पर विश्वास में दृढ़ होकर परमेश्वर की महिमा की। और निश्चय जाना, कि जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी सामर्थी है।
(5) दीनता : फिलिप्पियों 2:3-4 - विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* *यूहन्ना 1:19-51*

प्रस्तावित करें। यूहन्ना 1:19-51 का एक साथ अध्ययन करने के लिए पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना के अध्याय 1-12 यीशु मसीह की लोगों के बीच में की गई सेवकाई से सम्बन्धित है। यूहन्ना 1:15 से 2:12 बताते हैं कि किस प्रकार वचन,यीशु मसीह,यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और अपने प्रारम्भिक चेलों के सामने अपने आपको प्रगट करत हैं।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 1:19-51 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

1:39-46

***खोज 1* : आना और देखना**

जब यीशु के चेलों, यूहन्ना और अन्द्रियास ने उससे पूछा कि वह कहाँ रहता है, तब उसने उन्हें नहीं बताया, बल्कि उन्हें ये कहकर निमंत्रण दिया कि "चलो और देखो।" यीशु ने अन्य लोगों को अपने जीवन और अपने घर में *शामिल* किया। उसने उन्हें नज़दीकी से अपने आपको जानने और समझने का अवसर दिया। वो चाहता था कि वे लोग उसके जीवन को देखें। शीघ्र ही उसके चेलों ने वैसा ही किया। जब नतनएल ने यह प्रश्न उठाया कि यीशु ही मसीह हो सकता है, क्योंकि वो नासरत जैसी छोटी जगह से आया था, फिलिप्पुस ने उससे कहा "चलकर देख ले!" चेले भी चाहते थे कि अन्य लोग यीशु को जानें और यीशु के जीवन में अपने आपको शामिल करें। इसलिए उन्होंने उन्हें यीशु के पास आने का निमंत्रण दिया ताकि वे स्वयं आकर देखें कि यीशु कैसा था।

यदि मसीही लोग चाहते हैं कि दूसरे लोग यीशु को जानें कि वो कौन है, मसीही लोग कैसे होते हैं और वो कैसे रहते हैं, तो उन्हें उन लोगों को अपने जीवन और अपने घरों में *शामिल* करना चाहिए। मैं यीशु के चेलों के उदाहरण का अनुसरण करना चाहता हूँ। मैं भी चाहता हूँ कि अन्य लोगों को अपने घर और अपने जीवन में शामिल करूँ ताकि वे लोग भी जान सकें कि मसीही लोग कैसे रहते हैं और इस से वे यीशु को भी जान पाएँगे।

1:42

***खोज 2* - लोगों का अवलोकन कैसे करें?**

जब अन्द्रियास, अपने भाई शमौन को यीशु के पास लाया तब यीशु ने उस पर और उसके हृदय पर दृष्टि की। यीशु जानता था कि शमौन एक बड़ा व्यक्ति था, परन्तु उसका हृदय छोटा है। वह जानता था कि शमौन बड़े वायदे कर सकता है, परन्तु वास्तव में उन्हें सबके सामने बाहर लाने से डरता है। वह जानता था कि शमौन एक संवेदनशील व्यक्ति है। परन्तु यीशु एक महान भविष्यद्वक्ता है, जो किसी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति को ही नहीं वरन् उसके भविष्य को भी जानता है। वह जानता था कि शमौन का जीवन परिवर्तित हो सकता है और वह एक स्थिर, सीधा और दृढ व्यक्ति बन सकता है। यीशु ने शमौन की तरफ़ उस तरह नहीं देखा जो वह वर्तमान में था, परन्तु ऐसे देखा कि वह भविष्य में क्या बन सकता है। यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की कि किस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह उसे बदलेगा और परमेश्वर किस प्रकार अपनी इच्छा को उसके जीवन में पूरी करेगा। इसलिए, यीशु ने उसे एक नया नाम दिया और उसे "पतरस", कहा जिसका अर्थ है "पत्थर"। आगे मत्ती 16:18 में यीशु ने भविष्यद्वाणी की, कि "मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा"। और प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार यीशु पतरस को पहली कलीसिया स्थापित करने के लिए यहूदियों, सामरियों और अन्यजातियों के बीच में इस्तेमाल करता हैं।

मैं यीशु कि तरह बनना चाहता हूँ। मैं लोगों को उनकी वर्तमान स्थिति को नहीं, बल्कि यह देखना चाहता हूँ कि *परमेश्वर की करुणा के द्वारा वे भविष्य में क्या बन सकते हैं।* परमेश्वर की करुणा पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति

को परिवर्तित कर सकती है, मैं लोगों में आशा की किरण जगाना चाहता हूँ कि परमेश्वर की करुणा उन्हें बदल सकती है। लोगों की आलोचना और उनके सभी दोषों को देखने की बजाय, मैं लोगों को प्रोत्साहित करना और उनके मसीही जीवन में जो विकास हो रहा है, उसे देखना चाहूँगा।

कदम 3. प्रश्न.	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 1:19-51 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें।(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

1:21

प्रश्न 1 **: क्या यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला "एलिय्याह" था या नहीं?**

नोट्स

मलाकी 4:5-6 में लिखा है, "देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा। वह माता-पिता के मन को उनके पुत्रों की ओर, और पुत्रों के मन को उनके माता पिता की ओर फेरेगा; ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी का सत्यानाश करूँ।" इस भविष्यद्वाणी की अपनी स्वयं की *शाब्दिक* व्याख्या के आधार पर यहूदियों को ऐसा लगता था कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह भविष्यद्वक्ता स्वयं इस पृथ्वी पर वापस आयेगा।

हालाँकि, लूका 1:17 में, परमेश्वर का स्वर्गदूत भविष्यद्वाणी करता है कि प्रभु यीशु मसीह के आने से पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आयेगा और "एलिय्याह कि आत्मा और सामर्थ्य" में होकर अपने कार्य करेगा। "...वो पितरों का मन बाल-बच्चों की ओर फेर देगा और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ पर लाए, और प्रभु के लिए एक योग्य प्रजा तैयार करे।"

मत्ती 17:12-13 में यीशु ने भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को 'एलिय्याह' कहा। यद्यपि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह नहीं था, परमेश्वर के स्वर्गदूत (पुराने नियम में यीशु) और खुद यीशु (नए नियम में) ने कहा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मलाकी 4 में की गई भविष्यद्वाणी को पूरा किया है। एलिय्याह 'उसी का रूप' उसकी 'परछाई' था और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला उसी का वास्तविक 'प्रतिरूप' था जिसने उसकी परछाई को पूरा किया। यीशु ने स्पष्टरूप से कहा कि एलिय्याह (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला) आ चुका है, परन्तु इस्राएल के लोगों ने उसे न पहचाना और उसे मार डाला (लूका 9:9)।

1:25

प्रश्न 2 **: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला लोगों को पानी से बपतिस्मा क्यों देता था?**

नोट्स

(1) याजकों द्वारा शुद्धिकरण

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने स्पष्टरूप से कहा कि वह मसीह नहीं था, और न ही मलाकी द्वारा भविष्यद्वाणी की जाने वाला एलिय्याह था (मलाकी 4:5-6)। और न ही वह भविष्यद्वक्ता था जिसकी भविष्यद्वाणी मूसा ने की थी (व्यवस्थाविवरण 18:18-19)। फरीसियों ने उससे पूछा की जब यह अधिकार सिर्फ मसीह या उसके राजदूत के पास है तो वह क्यों लोगों को पानी से बपतिस्मा देता है? उन्हें यह लगता था कि सिर्फ मसीह या एलिय्याह या भविष्यद्वक्ता ही पानी से बपतिस्मा दे सकता था। फरीसियों को निश्चित रूप से यह पता था कि ऐसे ही किसी को भी शुद्धिकरण के कार्य के लिए प्रशासन की अनुमति नहीं दी गयी थी जिसमें पानी से बपतिस्मा देना भी एक कार्य था (यूहन्ना 3:23-26)। लैव्यव्यवस्था 14:1-7 में, केवल याजकों को ही बलिदान किये गए पक्षी के लहू और पानी के मिश्रण में

जीवित पक्षी को *छोड़ने या बपतिस्मा* देने की अनुमति दी गयी थी। केवल याजक को ही अनुमति थी कि इस पानी और लहू के मिश्रण को कोढ़ से पीड़ित व्यक्ति पर सात बार *छिड़ककर* उसको शुद्ध ठहराए।

(2) मसीह के द्वारा किया गया शुद्धिकरण का वायदा

इसके अलावा अंतिम विश्लेषण में, लोगों को शुद्ध करने का अधिकार स्पष्टरूप से एक मसीही आज्ञा थी। यहेजेकेल 36:25 में परमेश्वर कहता है, "मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा।" यहेजेकेल 37:23 में उसने कहा, "मैं उनको उन सब बस्तियों से, जहाँ वे पाप करते थे, निकालकर शुद्ध करूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर हूँगा"।

(3) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा शुद्धिकरण

अगर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मसीहा या कोई अगुवा, जैसा कि वो लोग सोचते थे, नहीं था, तो उसने पानी से बपतिस्मा क्यों दिया? यह स्पष्ट है कि फरीसियों को नहीं पता था कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कौन था। वे उसे समझ नहीं पाए, जब उसने कहा कि वह व्यक्ति वो है जिसके बारे में यशायाह 40:3 में यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यवाणी की थी, "किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो, हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो"। इसके द्वारा यूहन्ना ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह मसीहा के आगे भेजा गया *दूत* था और यह कि मसीहा स्वयं प्रभु (परमेश्वर) (यहोवा) से कम नहीं था (मरकुस 1:1-3)!

यूहन्ना ने यहूदियों से कहा कि मसीहा स्वयं तुम्हारे बीच में खड़ा था और उन्होंने उसे न पहचाना। उसने यहूदियों को चेतावनी दी, कि वे मसीहा को झूठा ठहराने की उत्सुकता में सच्चे मसीहा को अनदेखा कर रहे हैं। यूहन्ना 1:31 में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने कहा कि क्यों उसने पानी से बपतिस्मा दिया ताकि वह इस्राएलियों के सामने सच्चे मसीहा को ला सके। मरकुस 1:4 कहता है, "यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता, और पापों की क्षमा के लिये मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करता था।" उसने ये प्रचार किया कि यहूदियों को अपने पापों का अंगीकार करना चाहिए और मसीह को ग्रहण करने के लिए अपने हृदयों को तैयार करना चाहिए. इसी को दर्शाने के लिए वो पानी से बपतिस्मा देता था। पानी का बपतिस्मा आत्मिक शुद्धि के लिए उनकी आवश्यकता का प्रतीक था। यूहन्ना का बपतिस्मा अभी भी पुराने नियम के अनुसार शुद्धि कि विधियों में से एक था, जो लोगों की बाहरी और आत्मिक शुद्धि को सूचित करता था (परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के लिए)। उसने अपने प्रचार और पानी का बपतिस्मा देने के द्वारा समस्त इस्राएलियों का ध्यान परमेश्वर के मेम्ने की ओर केन्द्रित किया, जो संसार के सारे पापों को अपने ऊपर लेगा और पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों को बपतिस्मा देगा (यूहन्ना 1:33)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने केवल चिन्ह को दर्शाया, जबकि मसीहा, यीशु मसीह, उस को सच्चाई प्रगट करेगा : जो कि चिन्ह दर्शाते है, अर्थात पवित्र आत्मा के द्वारा आन्तरिक व आत्मिक शुद्धि और नया जन्म (मरकुस 1:8, यूहन्ना 3:5, तीतुस 3:4-6)!

1:29

***प्रश्न 3* - यीशु को "परमेश्वर का मेम्ना" क्यों कहा जाता है?**

नोट्स

यीशु मसीह को परमेश्वर का "मेम्ना कहा जाता है", क्योंकि उसने पुराने नियम में मेम्ने के विभिन्न उदाहरणों (प्रकारों) को पूरा किया। पुराने नियम में मेम्ना भविष्य की सच्चाई का एक प्रतिरूप (प्रकार, चित्रण) था, अर्थात् मसीहा।

(1) फसह का मेम्ना।

फसह के मेम्ने का फसह के दिन बलिदान चढ़ाया गया और मिस्र में विश्वासियों के घरों के अलंगों पर उसका खून लगाया गया ताकि मिस्र के अपश्चातापी लोगों पर परमेश्वर के क्रोध और न्याय (अन्त के दिन) को रोक सके। 1 कुरिन्थियों 5:7 में यीशु मसीह को : "फसह का मेम्ना कहा गया"। 1 पतरस 1:19 कहता है, "पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ"।

(2) दैनिक बलिदान के लिए मेम्ने की होमबलि।

गिनति 28:4 के अनुसार, याजकों को प्रत्येक भोर औरे प्रत्येक गोधूलि के समय एक मेम्ने की बलि चढ़ानी पड़ती थी।

लैव्यव्यवस्था अध्याय 1 के अनुसार, मेम्ना दोषरहित होना चाहिए था जो यह दर्शाता था कि यीशु पापरहित था। याजक को मेम्ने के सिर पर अपना हाथ रखना पड़ता था, जो यह दर्शाता था कि उस व्यक्ति का पाप यीशु मसीह पर रखा गया था। पुराने नियम में, पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस व्यक्ति की ओर से "होमबलि" को स्वीकार किया गया था। इसी प्रकार, नये नियम में, क्रूस पर यीशु मसीह का बलिदान विश्वासियों के लिए प्रायश्चित्त करने का एकमात्र प्रभावी तरीक़ा था (रोमियों 3:25)।

(3) वह मेम्ना जिसकी भविष्यद्वाणी यशायाह 53 में की गई थी।

यशायाह 53:6-7,10 कहता है, "हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया, और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। वह ...जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय ...तौभी यहोवा को यही भाया ...कि उसे कुचले, और उसके प्राण को दोषबलि करे। तब वह अपना वंश देखने पाएगा..."। लैव्यव्यवस्था 5:114-16 हमें सिखाती है कि "दोषबलि" को इसलिए चढ़ाया जाता था ताकि अगर परमेश्वर की उन चीज़ों के लिए जिसको उसने करने के लिए कहा हो और उस कार्य को करने में कोई व्यक्ति विफल रहा हो, तो इस बलि के द्वारा प्रायश्चित करे। दोषबलि के द्वारा प्रायश्चित हो गया, यानि उसने अपने पाप के विरूद्ध परमेश्वर के पवित्र क्रोध को दूर कर लिया।

इस प्रकार हम निष्कर्ष निकालते है कि पुराने नियम के सभी तीन मेम्ने, *दृष्टान्त (प्रकार)* है, जो नये नियम में यीशु मसीह में उनकी *पूर्ति (प्रतिरूप)* करते हैं!

1:32

प्रश्न 4 - पवित्र आत्मा को प्राप्त करना यीशु मसीह के लिए ज़रूरी क्यों था?

नोट्स

यूहन्ना रचित सुसमाचार के लेखक ने यह स्वीकार किया कि उसके पाठक अन्य तीन सुसमाचारों से परिचित हैं, जो कि यरदन नदी में यूहन्ना द्वारा यीशु मसीह को बपतिस्मा देने से सम्बन्धित है। उस समय, पवित्र आत्मा कबूतर के समान यीशु मसीह पर उतरा और उस पर बना रहा। हालाँकि पवित्र आत्मा का कोई शरीर नहीं होता और इसलिए उसे शारीरिक आँखों से नहीं देखा जा सकता, परमेश्वर ने यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को यह अनुमति दी कि वह पवित्र आत्मा को कबूतर के समान उतरते देखें। परमेश्वर ने कबूतर का रूप इसलिए चुना होगा क्योंकि कबूतर *पवित्रता, नम्रता और शान्ति का प्रतीक* है और ये सारी विशेषताएँ पवित्र आत्मा की भी है। परमेश्वर का आत्मा *पवित्र* है और इसलिए इफिसियों 4:30 के अनुसार, हर प्रकार का पाप पवित्र आत्मा को शोकित करता है। पवित्र आत्मा *नम्र* है, क्योंकि यूहन्ना 16:8,13 के अनुसार, वह लोगों को सच्चाई पर चलने के लिए बाध्य नहीं करता, परन्तु धीरे-धीरे वह उन्हें पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करता है। पवित्र आत्मा *शान्ति* है, क्योंकि रोमियों 14:17-20 के अनुसार, वह कोई ऐसा काम नहीं करता जिससे लोगों को ठोकर लगे, परन्तु वह वही करता है जिससे लोगों की उन्नत्ति होती है। यीशु पर पवित्र आत्मा कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष रूप से ठहरा रहा। स्वर्ग से पिता परमेश्वर की आवाज़ स्पष्टरूप से कहती है, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रेम करता हूँ और इससे मैं अति प्रसन्न हूँ (मत्ती 3:16-17)। यहाँ हम देखते हैं कि किस प्रकार त्रिएकता हमें अपने आपको पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट करता है।

यीशु मसीह के लिए पवित्र को प्राप्त करना क्यों ज़रूरी था? परमेश्वर का पुत्र अपने *अनदेखे (दिव्य) स्वभाव के अनुसार* आत्मा है (2 कुरिन्थियों 3:17), लेकिन अपने *मनुष्य स्वभाव के अनुसार* आत्मा को प्राप्त किया। जब यीशु ने पानी से बपतिस्मे के द्वारा पवित्र आत्मा को प्राप्त किया, तो उसने इसे अपने *मनुष्य स्वभाव* में प्राप्त किया, अपने स्वभाव में पवित्र आत्मा पाने के द्वारा, यीशु का पवित्र आत्मा के द्वारा *अभिषेक* किया गया, अर्थात् परमेश्वर द्वारा, उसे परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ के रूप में अपने विशेष कार्य के लिए (सार्वजनिक रूप से) *नियुक्त* किया था, और वह इस कार्य को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा से *भरा* हुआ था। लूका 4:18-19 में, यीशु स्वयं यह शिक्षा देते हैं कि यशायाह 61:1-2 में की गई भविष्यद्वाणी उसमें पूरी हुई थी। वचन कहता है, "प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिये भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ, कि बंधुओं के लिये स्वतंत्रता का और कैदियों के लिये छुटकारे का प्रचार करूँ, कि यहोवा के प्रसन्न रहने

के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूँ, कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ"। यूहन्ना 3:34 में, यूहन्ना कहता है, परमेश्वर ने यीशु को बिना नापे आत्मा को दिया है! यह बिल्कुल उसी प्रकार है जिस प्रकार पौलुस कुलुस्सियों 2:9 में कहता है, "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

1:47

प्रश्न 5 **- यीशु ने नतनएल को यह क्यों कहा, यह वह "इस्राएली है जिसमें कोई कपट नहीं"?**

नोट्स

51 आयत में स्वर्गदूतों का उतरना व चढ़ना यह दर्शाता है कि जब यीशु नतनएल को सम्बोधित कर रहा था, तब उसके मन में पूर्वज याकूब का ध्यान था। उत्पत्ति 27:35-36 में, इसहाक एसाव से कहता है कि उसका भाई *धूर्तता* से आया और एसाव के पहिलौठा का आशीर्वाद लेकर चला गया। एसाव कहता है कि उसके भाई का नाम "याकूब" बिल्कुल सही रखा गया है, जिसका अर्थ है "अड़ंगा मारनेवाला"। हालाँकि अपने स्वार्थी लाभ के लिए धोख़ा देने की यह विशेषता सिर्फ याकूब की ही नहीं थी। यह विशेषता उसके पुत्रों, यहूदियों में भी पाई जाती थी। उत्पत्ति 34 में, उन्होंने एक शहर के लागों को *धोख़ा* दिया, उन्हें मार डाला और उनकी सारी सम्पत्ति लूट ली।

एक सच्चा और ईमानदार इस्राएली, एक धोखा न देनेवाला यहूदी, एक अपवाद बन गया था, इसलिए जब यीशु नतनएल से मिला तो उसने तुरन्त कहा "यह सचमुच इस्राएली है इसमें कपट नहीं"। *धोख़ा देना* शायद सभी देश के लोगों की विशेषता है। यूहन्ना 2:24-25 में हम पढ़ते है कि यीशु सबको जानता है और वह यह भी जानता है कि मनुष्य के मन में क्या है। यीशु मुझे भी जानता है और मेरे अन्दर पाई जाने वाली सारी बातों को भी जानता है। वह मेरे विचारों को, उद्देश्यों और मेरे मन के भावों को भी जानता है। वह यह भी जानता है कि मैं कब धोख़ेबाज़ हो जाता हूँ। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि मैं पवित्र आत्मा को मेरे मन, मेरे उद्देश्यों और मेरे दृष्टिकोण को बदलने की इज़ाज़त दूँ।

1:51

प्रश्न 6 **- परमेश्वर के स्वर्गदूतों को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र पर उतरते देखने का क्या अर्थ है?**

नोट्स

उत्पत्ति 28 में याकूब ने स्वप्न में पृथ्वी पर सीढ़ी को खड़े हुए देखा, जिसका सिरा स्वर्ग तक पहुँचता था और परमेश्वर के स्वर्गदूत उस पर से चढ़ते-उतरते थे। यहोवा स्वयं उस सीढ़ी के ऊपर खड़ा था और याकूब को आशीर्वाद दे रहा था। उसने याकूब से यह वायदा किया कि, "तेरा वंश भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत होगा, और पश्चिम, पूरब, उत्तर, दक्षिण, चारों ओर फैलता जाएगा : और तेरे और तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे कुल आशीष पाएँगे। मैं तेरे संग रहूँगा, और जहाँ कहीं तू जाए वहाँ तेरी रक्षा करूँगा... मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूँ तब तक तुझ को न छोड़ूँगा" (उत्पत्ति 28:14-15)।

यूहन्ना के इस सुसमाचार में यीशु बताता है कि यह उदाहरण (प्रकार), यीशु मसीह (प्रतिरूप) के द्वारा पूरा होता है! यीशु मसीह स्वयं स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक कड़ी है। वह परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मध्यस्थ है (1 तीमुथियुस 2:5)! क्रूस पर अपना बलिदान देने के द्वारा वह परमेश्वर के साथ पापियों का और पापियों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कराता है।

यीशु ने नतनएल से कहा की वह इससे भी ज़्यादा बड़े-बड़े काम देखेगा। ये "बड़े-बड़े" काम क्या थे? चेलों ने देखा कि यीशु के आस-पास सरदार और भेद-भाव करने वाले लोग थे परन्तु यीशु ने सीधे नतनएल के हृदय को देखा। अब से चेलों को यीशु के और अधिक अनदेखे (दिव्य) गुणों को सीखना होगा। वह विशेषकर उसे क्रूस पर चढ़ते हुए देखेंगे, और यह भी देखेंगे कि किस प्रकार स्वर्ग को खोला जाएगा और मनुष्य परमेश्वर के क़रीब आयेंगे और संसार के सभी देशों के लोग उसके पास आयेंगे और परमेश्वर के साथ उनका मेल-मिलाप होगा (यूहन्ना 8:28; 12:32)। और अन्त में वे यीशु को देखेंगे जिसके पास प्रभुता और न्याय करने का अधिकार होगा और बाद में वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी पर शासन करेंगे (दानिय्येल 7:13-14)।

कदम 4. ***अनुप्रयोग***

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 1:19-51 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 1:19-51 में से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

1:22-23 जब पूछा जाए, तब लोगों को अपने कार्य और अपने जीवन में बुलाहट की स्पष्ट समझ देना।

1:29 लोगों के ध्यान को अपने ऊपर से हटाकर यीशु मसीह, परमेश्वर के मेम्ने की तरफ़ लगाना। लोगों को यीशु मसीह से अवगत कराना।

1:33 1 कुरिन्थियों 12:12-13, यूहन्ना 3:3-8 और तीतुस 3:4-8 में "पवित्र आत्मा के बपतिस्मे" के बारे में सबसे अच्छे तरीक़े से समझाया गया है। "पवित्र आत्मा से बार-बार पूरिपूर्ण" होने के बारे में इफिसियों 5:18-21 में सिखाया गया है।

1:39 मसीहियों के जीवन और उनकी सभाओं में लोगों को शामिल करें। उन्हें बोलें, "आइये और देखिये!" (पद 46 से तुलना करें)

1:42 अपने परिवार के सदस्यों को यीशु मसीह के समीप लाएँ।

1:42 लोगों की वर्तमान स्थिति को न देखें परन्तु यीशु मसीह के द्वारा वे भविष्य में क्या बन सकते हैं, उसे देखें।

1:43 यीशु ने हमें सिर्फ उसकी प्रशंसा करने के लिए ही नहीं, बल्कि उसकी बातों का पालन करने के लिए और उसके शिष्य बनने के लिए बुलाया है।

1:44 अपने मित्रों को यीशु मसीह के बारे में बताएँ। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से ही उसके बारे में लिखा हुआ है।

1:47 जब दूसरों की सराहना करने का समय हो, तो लोगों की सराहना ज़रूर करें।

1:49 सोचें, "यीशु को लेकर आप क्या अंगीकार करना चाहते हैं।"

2. यूहन्ना 1:19-51 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

"जाना और देखना" महत्वपूर्ण है, इसलिए मैं नियमित रूप से मसीही सभा में भाग लेता हूँ, ताकि मैं देख सकूँ कि मसीही लोग कैसे होते हैं और वे क्या करते हैं। मैं यीशु को बेहतर रूप से जानना चाहता हूँ और इसके लिए मैं बाइबल अध्ययन समूह (शिष्यता समूह) से जुड़ गया हूँ।

यीशु ने पतरस की वर्तमान स्थिति को नहीं, परन्तु वह भविष्य में क्या बन सकता है, उसे देखा। इस बात ने मुझे सबसे ज़्यादा प्रोत्साहित किया क्योंकि यीशु मुझे भी उसी प्रकार देखता है कि मैं क्या बन सकता हूँ और उसकी करूणा के द्वारा भविष्य में क्या बनूँगा। यही कारण है कि मैं उम्मीद करता हूँ कि यीशु मसीह मुझे वह व्यक्ति बनाये जो वह चाहता है कि मैं बनूँ।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 1:1-18 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[निवेदन]* ***दूसरों के लिए प्रार्थना करें***

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* ***दूसरे अध्याय के लिए कार्य***

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. यूहन्ना 1:19-51 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 कुरिन्थियों 6-8** के आधे अध्यायों के लिए चुना हुआ समय निर्धारित करें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें **(1) (यूहन्ना 1:14)**। पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।